हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ३

प्रसाद स्वीकार करना और अपने भाग्य को नया स्वरूप देना

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

जब गुरुमाई जी ने अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में क़दम रखा, उस समय पूरी आत्मनिधि बिल्डिंग, भूपाली राग में 'ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय' के नामसंकीर्तन से गूँज रही थी। सभी प्रतिभागी जन्मदिन का केक काटने की रसम के लिए गुरुमाई जी का स्वागत करने हेतु वहाँ एकत्र थे।

सन् १९५६ में, जब भारत में पहला सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ स्थापित हुआ, तबसे आश्रमों में वह स्थान जहाँ भोजन बनाया और परोसा जाता है, अन्नपूर्णा कहलाता है। गुरुमाई जी के गुरु, बाबा मुक्तानन्द ने अन्न की अधिष्ठात्री देवी, पोषण प्रदायिनी भगवती, माँ अन्नपूर्णा का सम्मान करने के लिए यह नाम दिया था। इतने वर्षों में कई बार, गुरुमाई जी और बाबा जी ने यह सिखावनी प्रदान की है : "अन्न ब्रह्म है।" और हममें से कई लोगों ने वर्ष २०१६ के गुरुमाई जी के जन्मदिन के प्रवचन "अन्न ब्रह्म है" से महान प्रेरणा भी प्राप्त की है। सिद्धयोग पथ पर हम अन्नपूर्णा देवी का सम्मान एक सुन्दर प्रार्थना, **अन्नपूर्णास्तोत्रम्** गाकर करते हैं।

अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में गुरुमाई जी का स्वागत कर रहे लोगों में अपने परिवार के साथ कई बच्चे भी थे। वहाँ छः माह का कुत्ते का एक बच्चा भी मौजूद था जिसका नाम था, आदिदेव। उसकी देख-भाल श्री मुक्तानन्द आश्रम की एक प्रबन्धक, शुभा डी ओलिविरा-थॉम्पसन और गार्डन विभाग के प्रमुख, रायन थॉम्पसन करते हैं।

गुरुमाई जी अपने आसन पर विराजमान हुईं। इसके बाद, महोत्सव की सूत्रधार और एस. वाय. डी. ए. फ़ाउण्डेशन की विश्वस्त, एलिज़ाबेथ ग्रेग ने गुरुमाई जी का स्वागत किया और सभी को उनके साथ गुरुमाई जी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देने के लिए आमन्त्रित किया। हम सब तो बस इसी क्षण का इन्तज़ार कर रहे थे — जब एक साथ मिलकर हम गुरुमाई जी को अपना प्रेम अर्पित कर सकें और उन्हें शुभकामनाएँ दे सकें कि यह जन्मदिन सर्वोत्कृष्ट हो।

फिर कृष्ण हदाद ने जो जन्मदिन महोत्सव के लिए संगीत संचालक थे, संगीत मण्डली का एवं हम सबका नेतृत्व किया और हम सबने श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्, "श्रीगुरु की पादुकाओं का स्तुतिगान करने वाले पाँच श्लोक" गाए। सिद्धयोग पथ पर श्रीगुरुपादुकाओं को नमन करने हेतु ये श्लोक श्रीगुरुगीता-पाठ के एक भाग के रूप में हर सुबह गाए जाते हैं। शास्त्र स्तुतिगान करते हुए कहते हैं कि श्रीगुरु के चरणकमल, ज्ञान और शक्ति का मूर्तरूप हैं। 'निज़ामुद्दीन और अमीर खुसरो' की कहानी जिसे हम गुरुपूर्णिमा के समय प्रायः पढ़ते और सुनाते हैं, श्रीगुरुपादुकाओं की शक्ति का ही एक उदाहरण है।

गुरुमाई जी का इस प्रकार से सम्मान कर हमारे हृदय श्रद्धा-भक्ति से भर गए थे। कृष्ण के संकेत पर हमने **नाचो रे मेरो मन** भजन गाना आरम्भ कर दिया। सन्त-कवि कबीर साहब द्वारा लिखे इस भजन की संगीत-रचना गुरुमाई जी ने कैलिफ़ोर्निया स्थित सेन्टा क्लारा में १९९७-१९९८ की शीत ऋतु में आयोजित सिद्धयोग रिट्रीट के लिए की थी। विश्वभर में, पिछले कई वर्षों से यह भजन गुरुमाई जी के हर जन्मदिन महोत्सव पर गाया जाता है।

इस भजन के पहले पद में हम गाते हैं :

इस दिव्य प्रेम कि बाढ़ में,
तारामण्डल और नवग्रह आनन्द से झूम रहे हैं।
जीवात्मा का हर नया जन्म महान आनन्द का विषय है।
पर्वत, समुद्र और धरती नृत्य कर रहे हैं।
सम्पूर्ण मानवता इस परमानन्द को हँसी और आँसुओं के साथ मना रही है।

एक विज़िटिंग सेवाकर्ता ने नाचो रे मेरो मन गाने का अपना अनुभव बताते हुए कहा :

> जब हम भजन गा रहे थे तो छः माह का एक बालक वहाँ बैठा था और गुरुमाई जी को एकटक देख रहा था। ऐसा लग रहा था कि वह हर क्षण का मज़ा ले रहा है। उसकी बाहें और हाथ लहरा रहे थे, शरीर झूम रहा था और चेहरे पर एक उज्ज्वल मुस्कान दमक रही थी। गुरुमाई जी ने

> अपनी आँखें चौड़ी करके उसकी ओर देखा तो वह किलकारियाँ मारकर हँसने लगा। एक बार उसने अपना हाथ अपने हृदय पर रखा तो प्रतिउत्तर में गुरुमाई जी ने भी अपना हाथ अपने हृदय पर रखा। उनके इस परस्पर आदान-प्रदान का सौन्दर्य देखते ही बनता था। उसने मेरे हृदय को अन्दर तक छू लिया।

"दिव्य प्रेम की बाढ़," को हॉल में बड़ी ही गहराई से महसूस किया जा सकता था। जब ऐलीज़ाबेथ जन्मदिन का केक काटने के लिए गुरुमाई जी को स्नेहपूर्ण आमन्त्रण दे रही थीं तो हम सब "दिव्य प्रेम की बाढ़," का अनुभव कर रहे थे।

गुरुमाई जी ने मुड़कर उस खूबसूरत केक की ओर देखा। फिर गुरुमाई जी ने कहा, "मैं एक कहानी सुनाना चाहती हूँ" और फिर उन्होंने यह कहानी सुनाई :

> एक बार की बात है एक रब्बी [यहूदी धर्मगुरु] थे। हाँ, कैटस्किल की पहाड़ियों में रब्बी की कहानी सुनाना एकदम सही है। ये रब्बी अस्सी साल के थे। एक दिन किसी ने उनसे एक सवाल पूछा, "रब्बी, आपके हज़ारों शिष्य हुआ करते थे, और अब केवल तीन ही हैं। ऐसा क्यों?" रब्बी ने कहा, "एक समय था जब मैं युवा था। मैं उन सभी शिष्यों की देखभाल कर सकता था। और अब मैं अस्सी बरस का हूँ। अब मैं केवल तीन शिष्यों की देखभाल ही कर सकता हूँ।"

गुरुमाई जी ने स्पष्ट किया कि वे यह कहानी क्यों सुना रहीं हैं। "इतने वर्षों के दौरान मैंने देखा है कि जन्मदिन के केक का साइज़ हमेशा अलग-अलग होता है। वास्तव में, मुझे बताया गया था कि एक बार १९९० के दशक के शुरुआती वर्षों में, जन्मदिन का शानदार केक इतना विशाल था कि बेकर्स को उसे दरवाज़े से अन्दर ला पाना संभव नहीं था इसलिए उन्हें दरवाज़े को निकालना पड़ा था ताकि केक अन्दर आ सके।"

कहानी का यह चित्रण सुनकर अन्नपूर्णा भोजन-हॉल में उपस्थित सभी लोगों में हँसी की लहर दौड़ गई। हमारी कल्पनाएँ पँख लगाकर उड़ने लगीं। वह केक कितना विशालकाय रहा होगा! उसकी लम्बाई और चौड़ाई कितनी रही होगी? हम हँस ही रहे थे कि तभी गुरुमाई जी ने रब्बी की कहानी और इस साल के जन्मदिन के केक के साइज़ के बीच क्या सम्बन्ध है यह बताना शुरू किया। उन्होंने कहा "एक समय था जब मैं युवा थी। मेरे जन्मदिन के सभी केक इतने बड़े हुआ करते थे कि बेकर्स को मेनटेनैन्स विभाग से आदमियों को बुलवाकर दरवाज़े निकालने पड़ते थे। तो अभी जब मेरी नज़र इस

वर्ष के केक पर पड़ी तो मैंने सोचा, "रब्बी की तरह शायद मेरी भी उम्र हो चली है। बेकर्स यह सोचते होंगे कि गुरुमाई अब इतनी ही बड़ी केक को सँभाल पाएँगी।"

यह सुनते ही, ठहाके गूँजने लगे। गुरुमाई जी की हँसी से भरी आवाज़ और सभी भक्तों की हँसी से अन्नपूर्णा भोजन-हॉल इस तरह से गूँज उठा मानो बादल गरज रहे हों। हँसी के उस क्षण में, गुरुमाई जी ने कहा, "आज हम हँसी की भेंट दे रहे हैं! यही इस जन्मदिन महोत्सव २०१८ का विषय है : *हँसी की भेंट!*"

फिर गुरुमाई जी केक की ओर जाने के लिए अपने आसन से उठीं तो उनकी नज़र दस वर्ष की एक सिद्धयोगी प्रेमा पर पड़ी जो महोत्सव के लिए एक रंगबिरंगा परिधान पहने वहीं खड़ी थी। गुरुमाई जी ने प्रेमा से पूछा कि क्या वह केक काटने में उनकी मदद करेगी। प्रत्युत्तर में प्रेमा की बाँछें खिल गईं और उसने सिर हिलाकर हाँ कहा। साथ मिलकर उन्होंने केक की एक परत पर बहुत सुन्दरता से लगीं पतली-पतली ग्यारह सुनहरी मोमबत्तियाँ बुझाईं और हम सबने एक स्वर में जयघोष किया, "सद्गुरुनाथ महाराज की जय।"

गुरुमाई जी ने अपने हाथों में प्रेमा का हाथ लिया और उसके साथ मिलकर केक का पहला टुकड़ा काटा। गुरुमाई जी ने एक छोटा-सा टुकड़ा काँटे से उठाया और उसे प्रेमा की ओर बढ़ाया। इस प्रसाद को लेते समय प्रेमा की आँखें खुशी से चौड़ी हो गईं। गुरुमाई जी ने प्रेमा से पूछा कि क्या केक अच्छा है तो प्रेमा की आँखें और भी चौड़ी हो गईं और उसने उत्साह से अपना सिर हिलाते हुए कहा, "हूँऽऽऽऽ।"

इस क्षण के पीछे एक कहानी है जो प्रेमा के लिए बहुत महत्त्व रखती है। छः वर्ष पहले, २०१२ में जब प्रेमा चार साल की थी, उसने श्री मुक्तानन्द आश्रम में गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव में भाग लिया था। जब गुरुमाई जी केक काटने के लिए उठीं तो उनके आस-पास कई बच्चे इकट्ठा हो गए। मोमबत्तियाँ बुझाने के बाद गुरुमाई जी पहले बच्चों को केक खिलाने लगीं। गुरुमाई जी ने एक छोटे-से बालक को केक का एक टुकड़ा देना चाहा तो उस बच्चे ने सिर हिलाकर ना कह दिया — उसे केक नहीं खाना था। गुरुमाई जी केक खिलाने के लिए अगले बच्चे की ओर मुड़ीं और वह थी प्रेमा। प्रेमा ने उस लड़के की देखादेखी, ना कह दिया। गुरुमाई जी उसे जो केक देना चाहती थीं, वह उसने नहीं लिया। बाक़ी बच्चों ने बड़े उत्साह से गुरुमाई जी द्वारा दिया गया केक स्वीकार किया और खूब स्वाद ले-लेकर उसे खाया। वर्ष २०१२ का यह आदान-प्रदान, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर **आनन्दमय जन्मदिवस तीर्थयात्रा** की **वीडिओ** रिकॉर्डिंग में संग्रहीत है। प्रेमा, उसके परिवार और मित्रों ने इन वर्षों में कई बार वह वीडिओ देखा है।

जब भी वे इस वीडिओ को देखते तो कोई न कोई इस बात पर टिप्पणी कर ही देता कि कैसे प्रेमा ने गुरुमाई जी से केक नहीं ली थी। प्रेमा ने कई बार उस क्षण के बारे में सोचा है जब अपनी गुरु से उसने मधुर प्रसाद नहीं लिया था। प्रेमा के माता-पिता का ऐसा विचार था कि गुरुमाई जी जब प्रेमा को केक दे रहीं थीं तो उसकी स्वाभाविक इच्छा केक को स्वीकार करने की ही थी। पर फिर भी, अपने हृदय की बात सुनने के बजाय उसने यह देखा कि उससे पहले वाले बच्चे ने क्या किया था और उसने उसका अनुसरण किया क्योंकि उसने सोचा कि यही "उचित व्यवहार" होगा।

इस वर्ष, २०१८ में, प्रेमा ने न केवल केक काटने में गुरुमाई जी की मदद की बल्कि जब गुरुमाई जी केक का टुकड़ा देने के लिए उसकी ओर बढ़ीं तो उसने केक चखने का गुरुमाई जी का आमन्त्रण खुलकर स्वीकार किया। उसने अपने हृदय की बात सुनी और प्रसाद को तत्परता से स्वीकार किया। जिन्होंने भी आनन्दमय जन्मदिवस तीर्थयात्रा वीडिओ को देखा है और फिर इस प्रसंग को देखा — या जो इस वृत्तान्त को पढ़ रहे हैं, उन सभी को यह एहसास हुआ होगा कि प्रेमा ने अपनी कहानी को बदल दिया है। उसने अपने भाग्य को नया स्वरूप दिया है।

केक काटने के समारोह के बाद, गुरुमाई जी ने हम सबकी ओर देखा। उनके चेहरे पर एक मनोहर मुस्कान थी और आँखों में एक चमक। उन्होंने कहा, "तुम सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। अब तुम सब जन्मदिन महोत्सव सत्संग आरम्भ करने के लिए श्रीनिलय जा सकते हो, और मैं अन्नपूर्णा रसोईघर में जाती हूँ और देखती हूँ कि बावर्ची हमारे लिए भोजन बना रहे हैं या नहीं। जल्द ही हम फिर मिलेंगे।"

गुरुमाई जी को यह कहता सुन कि वे यह पता लगाने जा रही हैं कि दोपहर का भोजन बनाया जा रहा है या नहीं, हम सब और भी ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे! हमारा रोम-रोम गुदगुदा उठा। गुरुमाई जी का इस तरह चिढ़ाना, उनका हँसी-मज़ाक करना और उनका विनोदप्रिय स्वभाव हमें अत्यन्त प्रिय है।

यह जानकर कि इस महोत्सव में अभी और भी बहुत कुछ बाक़ी है — हम जल्द ही गुरुमाई जी से फिर मिलने वाले हैं — हमारे हृदय खुशी से झूम रहे थे। गुरुमाई जी का पुनः स्वागत करने के लिए श्रीनिलय जाते समय हमें चलना नहीं पड़ रहा था; हम तो जैसे हवा में तैरते हुए वहाँ पहुँचे थे।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

क्रमशः . . .